भूल का अहसास

आज महाविदायालय का पहला दिन है । विद्यार्थियों में एक अजब उत्साह एवं जोश है । सीनियर स्टूडन्स में जोश ही जोश है वे नये विद्यार्थियों को देखना चाहते हैं, उनको समझना चाहते हैं, उनसे मिलना चाहते हैं । सीनियर, जूनियर से प्रेम-भाव से मिलते हैं, उनका परिचय पाना चाहते हैं । सभी विद्यार्थी आपस में मिल रहें हैं, बीच-बीच में हँसी-मजाक भी होता जा रहा है । इन्हीं विद्यार्थियों से कभी-कभी कुछ सवाल पूछ बैठता है । कुछ ही पल में सात-साठ छात्राओं का गोल आता हुआ दिखा । सभी विद्यार्थी उस ओर तेजी से लपके। सवाल-जवाब का आदान-प्रदान होने लगता है । सुशील की निगाह एक लडकी पर टिक जाती है जो चुस्त स्कर्ट और टॉप पहने हुए थी । पूरी पाश्चात्य संस्कृति में सराबोर थी । वह बहुत बोल्ड भी थी सीनियर स्टूडेन्स को अंग्रेजी में फटाफट जवाब दे रही थी । सभी सीनियर, उसकी इस बेबाकी पर थोड़ा नाराज थे ... लेकिन.. वे मजबूर थे । उनको तो जूनियर के सामने एक अच्छी मिसाल रखनी थी । उस आधुनिक लड़की का नाम था.. नीलम । नाक के अनुरूप वह नीलम परी की तरह लगती थी, लेकिन वह पाश्चात्य संस्कृति व भाषा की पुजारिन थी ।

एक बार महाविद्यालय का एनुवल फंक्शन था । उसमें 'शकुन्तला' नाटक खेलने की योजना बनाई गई । सबसे बड़ी समस्या थी कि 'दुष्यन्त' और 'शकुन्तला' की भूमिका किसे दी जाए । इसके लिए एक समिति बनाई गई । विचार-विमर्श के पश्चात सदस्यों ने 'दुष्यन्त' के लिए 'सुशील' को और 'शकुन्तला' की भूमिका के लिए 'नीलम' को चुना । सुशील ने जैसे ही, उसे यह सूचना दी, तुमको शकुन्तला की भूमिका के लिए चुना गया है - वह जोर से हँसी और कहा -

"व्हाट नॉनसेन्स ! मैं संस्कृत ड्रामा में काम करूँगी...

"नहीं बिल्कुल नहीं ... शेक्सपीयर के नाटक में तो बखूबी भूमिका कर सकती हूँ ... ।"

प्लीज योर नेम... नीलम ने पूछा...

मैं सुशील वर्मा हूँ....

यही दोनों का प्रथम परिचय था । नीलम बी. ए. प्रथम वर्ष की छात्रा थी और सुशील बी. ए. द्वितीय वर्ष का छात्र था । दोनों स्पर्धाओं में, प्रतियोगिताओं में मिलते रहते थे । भाषण प्रतियोगिताओं और वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में, सुशील और नीलम दोनों बढचढकर हिस्सा लेते, लेकिन दोनों नदी के दो छोर थे । दोनों के विचारों में जमीन आसमान का फर्क था । इसके बावजूद दोनों के दिलों में एक दूसरे के प्रति गहरा लगाव था । धीरे-धीरे इसने प्रेम का रूप धारण कर लिया । 'नीलम' सम्पन्न माता-पिता की इकलौती सन्तान थी । घर के सभी अंग्रेजी में ही बातचीत करते थे । हिन्दी में बात करना, वह अपना अपमान समझते थे । इसका पूरा प्रभाव बेटी 'नीलम' पर पड़ा था । अंग्रेजियत उसके नसनस में समाई थी । इसके विपरीत सुशील भारतीय संस्कृति और हिन्दी का उपासक था । ऐसा नहीं था कि वह अंग्रेजी नहीं जानता था... लेकिन अंग्रेजी के सामने हिन्दी का अपमान हो, यह वह कभी बर्दाश्त नहीं कर सकता था ।

एक बार हिन्दी विभाग ने 'राष्ट्रभाषा हिन्दी' विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया । नीलम ने हिन्दी और अंग्रेजी की तुलना करते हुए अंग्रेजी भाषा के महत्त्व पर जोरदार भाषण दिया । सुशील उसके विचारों से एकदम उदास-सा होगया और अपने विचार व्यक्त किए बिना ही वापस घर आ गया । एक ओर तो वह नीलम को बहुत पसन्द करता था दूसरी ओर उसके हिन्दी विरोधी विचारों को सुनकर तिलमिला-सा जाता था ... आगे क्या होगा.. दो विरोधी बातें एकसाथ कैसे सम्भव होंगी, होंगी...

उसने सोचा चलो एक बार नीलम को समझा करके तो देखें ...

एक दिन वे दोनों नदी किनारे चहलकदमी कर रहे थे । नीलम बहुत अच्छे मूड में थी । मौका देखते ही सुशील ने कहा.. नीलम ! मै तुमसे बहुत दिनों से एक बात कहना चाहता हूँ...

हाँ कहो.. 'से यू स्योर'...। नीलम ने कहा...। "तुम हिन्दी प्रेमी बनो, हिन्दी का सम्मान करना सीखो..।" "आई लाइक अंग्रेजी । दिस इज गुड लैंग्वज.. आई डोन्ट लाईक हिन्दी । आई कै नॉट स्पीक हिन्दी...।"

सुशील ने झल्लाने हुए कहा .. "लेकिन तुम्हारा नाम तो शुद्ध हिन्दी का है, नीलम... ।"

"नो.. माई नेम इज नेलम । दिस इज नाट प्योर हिन्दी ।"

और ...और सुशील, नीलम को देखता रह गया, देखता रह गया ।

सुशील ने मन में दृढ निश्चय कर लिया कि वह नीलम के हृदय में हिन्दी - प्रेम जगाकर रहेगा... जगाकर रहेगा, हिन्दी प्रेमी बनाएगा... इसके बावजूद दोनों एक दूसरे के करीब आते गए । उनका प्यार परवान चढता गया ।

एक बार सुशील ने 'हिन्दी - प्रेम' विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया । उसने नीलम से कहा कि तुम्हे 'हिन्दी-प्रेम' विषय पर आने विचार व्यक्त करने होंगे....

उसने साफ इन्कार कर दिया और कहा कि 'अंग्रेजी लव' पर तो वह अपने विचार व्यक्त कर सकती है, हिन्दी प्रेम पर नहीं ''।...

यहीं बात खत्म हो गई लेकिन सुशील के मन में कहीं एक फांस - सी गड़ गई ।

सुशील हिन्दी में पी. एच. डी. करके एक महाविद्यालय में हिन्दी का अध्यापक बन गया । उसके माता-पिता, भाई-बहन सभी बहुत खुश थे । यह खबर सुनते ही नीलम का चेहरा खुशी से खिल उठा ।

नीलम ने, सुशील से कहा, अब हमें शादी कर लेना चाहिए, लेकिन क्या तुम हिन्दी अध्यापक से शादी करना पसन्द करोगी ...

'यस, व्हाई नाट'...

बताओ मैं मम्मी-पापा को तुम्हारे घर कब भेजूँ लेकिन नीलम मेरी एक शर्त है..

'व्हाट इज योर कन्डीशन' नीलम ने कहा..

सुशील ने नीलम की ओर देखा जिसमें एक गहरी आशा की किरण थी ...

'तुम्हे हिन्दी-प्रेमी बनना होगा ... अपनी भाषा का मान-सम्मान करना होगा । अपने जीवन में हिन्दी का प्रयोग करना होगा । तुम्हें भारतीय संस्कृति की उपासिका बनना होगा ।

क्या हिन्दी, अंग्रेजी से कम है.. हिन्दी का अपना एक गौरवमय इतिहास है । अनेक देशों में हिन्दी बोली और पढ़ाई जाती है । क्या कमी है, हिन्दी में... ।'

यह कहकर सुशील चुप हो गया ... दोनों ओर से कोई कुछ न बोला । एक लम्बी चुप्पी के बाद अचानक नीलम बोली...

आई कान्ट स्पीक इन हिन्दी...

व्हाट विल यू डू...

डू नाट गेट मैरी टू मी

आई डोन्ट केअर

सुशील जोर से चीखा.... तुम कभी नहीं समझोगी और वह पैर पटकता हुआ बाहर चला गया । शोर गुल सुनकर नीलम के मम्मी-डैडी ड्राइंगरूम मे आ गए ।

व्हाट हैपन... नीलम... उसके डैडी ने पूछा.. डैडी ! सुशील ऑल टाइम 'हिन्दी प्रेमी बनो'.. कहता रहता है - हिन्दी में बोलो, कहता रहता है ।

तो क्या हुआ बेटी तुम्हे अंग्रेजी के साथ हिन्दी भी तो आनी चाहिए । ठीक तो कहता है... सुशील है... ना ।

बेटी वह बहुत अच्छा लड़का है, उसकी अच्छी सर्विस है... ऐसा लड़का तो ढूँढने पर भी नहीं मिलेगा ... बहुत उदास होकर, नीलम की मम्मी ने कहा..

एक बार फिर सुशील ने उसको समझाने की कोशिश की.. लेकिन सब कोशिशें व्यर्थ गईं । एक दिन उसने बहुत आवेश में कहा कि मैं ऐसी लड़की से विवाह नहीं करूँगा जिसे अपनी भाषा एवं भारतीय संस्कृति का ज्ञान न हो और जो अंग्रेजी के समक्ष, अपनी हिन्दी भाषा को हेच समझती हो । मैंने सोचा था, मेरे इतना समझाने पर तुम मान जाओगी, अपने को बदल लोगी.... अपने को सुधार लोगी । तुम नहीं बदलोगी.... तुम नही बदलोगी... तुम नहीं बदलोगी ।

इतना कहकर नीलम चुप हो गई... ''इसके बाद क्या हुआ .. नीलम...?'' रीमा ने पूछा....

'नीलम' ने एक गहरी सांस ली और दर्दभरी आवाज में बोली....

उसके जाने के बाद मुझे अपनी भूल का अहसास हुआ । मेरा जीवन नरकमय बन गया था । मेरे गम में मम्मी-डैडी भी चल बसे... सुशील की बातों का मेरे ऊपर पहुत असर हुआ । मैं अपने जीवन में सुशील को पा तो न सकी । पर मैंने अपने को, सुशील के विचारों के अनुसार ढाल लिया है ।

मैंने बी. ए. के बाद हिन्दी विषय में एम. ए. किया और पी. एच. डी. की यहाँ कें 'महिला महाविद्यालय' में हिन्दी अध्यापिका के रूप में मेरी नियुक्ति हो गई । अब तो हिन्दी ही मेरा जीवन है ... हिन्दी ही मेरे लिए सब कुछ है... यह मेरी भूल का खूबसूरत एहसास है... एहसास है.. एहसास है...

- डॉ. इशरत बी. खान